Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 04 April - 2024

DOIs:10.2018/SS/202404010 --:-- Research Paper / Article / Review

संत कबीरदास के दार्शनिक विचारों की प्रासंगिकता

अंशु शेखर

शोधार्थी, हिंदी विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना - 800020

ई. मेल - anshushekhar15@gmail.com

शोध सार : इस बात में कोई दो राय नहीं है कि कबीर युग द्रष्टा दार्शनिक थे। वाणी के डिक्टेटर के रूप में जिस प्रकार दार्शनिक तथ्यों को कबीर ने समाज के सामने रखा है, वह निश्चय ही एक दिशा विहीन समाज को जो कि जात- पाँत, छुआछूत, धार्मिक पाखंड, रूढ़ियों, मिथ्याडंबर , हिंदू मुस्लिम संकीर्णता एवं वैमनस्यता, पुरोहितवाद, कठमुल्लावाद, अंधविश्वास तथा तमाम विकृतियों एवं विसंगतियों से ओत प्रोत था, उसे एक सम्यक जीवन दर्शन देने का कार्य करता है। वर्तमान समय में भी यदि देखें तो हम पाएंगे कि कबीर के दार्शनिक विचार, उनकी दार्शनिक उक्तियों आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। जीवन के परम लक्ष्य को न जानकर एक दूसरे पर वर्चस्व कायम करने की प्रवृत्ति आज भी समाज में व्याप्त है, जिसका जीता जागता उदाहरण रूस-यूक्रेन का युद्ध है। सैकड़ों निर्दोष लोग अपनी जान गँवा चुके हैं, और न जाने कितने गँवाने के कगार पर हैं। कबीर के यदि जीवन दर्शन एवं उनके आध्यात्मिक विचारों को देखा जाए तो वह हमें आज भी इन वर्चस्व स्थापित करने वाली झूठी शान-ओ-शौकत से दूर रहकर, जीवन का सच जानकर, भगवद्भक्ति से अपना साक्षात्कार कर, ऐसे जीवन जीने की प्रेरणा देती है, जो स्वयं के साथ साथ पूरी मानव जाति का कल्याण करने वाला हो।

कबीर का जीवन दर्शन देखने पर हमें यह ज्ञात होता है कि जुलाहे का काम करते हुए भी वे अपनी भगवद्भक्ति में लीन रहें, एवं अंततः परम तत्व का साक्षात्कार इन्होंने किया। बौद्ध दर्शन में जो भिक्षु की प्रवृत्ति तथा जैन दर्शन में जिस प्रकार कठोरता से संन्यासी जीवन के नियम पालन की अभिवृत्ति है, वह कबीर में गौण है। इस प्रकार साधनात्मक एवं भावनात्मक जीवन दर्शन जो कबीर में है, वह निश्चय ही वर्तमान समय में प्रासंगिक है।

बीज शब्द: कबीर, दार्शनिक, दर्शन के विभिन्न संप्रदाय व आयाम, जीवन-मूल्य, प्रासंगिकता ।

1. मूल आलेख :

संत कबीरदास के दार्शनिक विचारों को जानने से पूर्व सर्वप्रथम हम यह समझेंगे कि दर्शन क्या हैं? भारतीय संदर्भ में दर्शन की जो परिभाषा है, वह है "दृश्यति अनेन इति दर्शनम्" अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए, वह दर्शन है।

पाश्चात्य संदर्भ में दर्शन को Philosophy के रूप में जाना जाता है। Philosophy दो शब्द 'Philo' और Sophia' से मिलकर बना है। 'Philo' का अर्थ है "Loving" और Sophia' का अर्थ है knowledge' या Wisdom, इस प्रकार 'Philosophy' शब्द का अर्थ हुआ" love of wisdom or knowledge".

कबीर के संदर्भ में यदि दार्शनिक तथ्यों का विवेचन किया जाए तो हम पाएंगे कि कबीर के दार्शनिक विचार भारतीय दर्शन पर बिल्कुल सटीक बैठते हैं। चूँकि भारतीय दर्शन स्वयं के अनुभव को खुद के द्वारा जाने गये तथ्यों पर विश्वास करता है और संत कबीर स्वयं कहते हैं "तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखन की देखी अर्थात् कबीर ने

जो स्वयं जाना उसे ही कहा।कबीर के दर्शन में जो ईश्वर का विचार है वह सगुण-निर्गुण से परे है, कबीर स्वयं कहते हैं "सगुण-निर्गुण से परे, तहै हमारा ध्यान।"कबीर एक प्रकार से अद्वैतवाद को स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा है -

जल में कुंभ हैं कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।

फूटा कुंभ जल जलहि समाना यह तथ्य कथ्यो ग्यानी ॥

यहाँ कुंभ अहंकार का प्रतीक है और जल आत्मा का, यदि जीते जी हम अहंकार की वास्तविकता को जान लें तो उससे मुक्त हो सकते हैं। अहंकार के अनुसार हम कर्त्ता है, पर कबीर इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करवाते हैं कि आप कर्त्ता नहीं अपितु द्रष्टा हैं। संत कबीर के ही शब्दों में:

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है में नाहीं।

प्रेम गली अति साँकरी, ता मेंदू न समाहिं।।

यहाँ 'मैं', 'अहंकार' का प्रतीक है, जब अहंकार की वास्तविकता पकड़ में आती है, तब वह जीव उससे मुक्त हो जाता है, और स्वयं ईश्वर का स्वरूप बन जाता है तब 'अनलहक, 'अहम् ब्रहमास्मि' तथा 'तत्त्वमसि' जैसा उद्घोष उठता है जिससे वह तथागत सम्यक् सम्बुद्ध की तरह सिंहनाद कर उठता है कि ऐ शरीर! मैंने सत्य जान लिया है अब तू मेरे लिए दुबारा संसार में घर निर्मित नहीं कर सकता।आचार्य चाणक्य ने भी कहा है विषयों में आसक्त मन बंधन का तथा विषयों से विरक्त मन ही मनुष्य के मुक्ति का कारण है-

बन्धाय विषयासक्तं मुक्तयै निर्विषयं मनः ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ॥[1] '

बौद्ध दर्शन में जो 'मार' है, वह 'मन' का ही प्रतीक है। यही मन मनुष्य को भटकाता है और सत्य से दूर ले जाता है। इस मन का जो अतिक्रमण कर जाता है, वह सत्य को जान लेता है। संत कबीर कहते हैं-

तन को जोगी सब करे, मन को विरला कोई।

सहजे सब विधि पाइए, जो मन जोगी होय ||

मोक्ष का अर्थ ही यही है कि आप संसार में रहें, लेकिन संसार आप में न रहे। इसे इस तरह भी समझ सकते है कि यदि हमारी इच्छाएं, आकांक्षाएं बाकी रह जाएं और श्वास चली जाए तो यह मृत्यु है और यदि हमारी इच्छाएं मर जाएं और श्वास बाकी रह जाए तो यह मोक्ष है। कमल की तरह जिसने जीना सीख लिया, वह मुक्त है। कमल, जल में होते हुए भी उससे अलिप्त रहता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि हम किस प्रकार जान सकते। इसके लिए संत कबीरदास ने रास्ता बतलाते हुए ईशारों में कहा है:

ज्यों तिल माहि तेल है, ज्यों चकमक में आग ।

तेरा साईं तुझी में है, जाग सके तो जाग ॥

जिस प्रकार तिल में तेल तथा चकमक में आग विद्यमान रहते हुए भी, तब तक हमें पता नहीं चलता, जब तक हम उसे प्राप्त करने के लिए उचित साधन नहीं करते। संत कबीरदास कुंडलिनी जागरण के द्वारा भी उस परम सत्य से साक्षात्कार करने का मार्ग बतलाते हैं।संसार की विडंबना यह है कि मनुष्य वही काम करता है, जो उसे आसान प्रतीत

होता है। सामान्यतः मनुष्य उसे मंदिर, मस्जिद में ढूँढता फिरता है, जबकि संत कबीर कहते हैं कि वह काबा, कैलाश आदि में नहीं है बल्कि वह स्वयं आपके भीतर स्थित है- "कस्तूरी कुंडल बसे, मृगया ढूँढै वन माहि" ।

सूफी साधिका राबिया का एक प्रसंग यहाँ द्रष्टव्य है। हुआ यह था कि राबिया ने कुछ फकीरों को बात-चीत करते देख लिया, वे सभी इस तथ्य पर विचार कर रहे थे कि इतने सारे जगहों पर हमने अच्छी तरह छानबीन कर लिया पर खुदा नहीं मिला। राबिया उन्हें सत्य से अवगत कराने हेतु जहाँ पर ये ने साधु थे तथा प्रकाश था, वहाँ जाकर कुछ ढूँढ़ने का प्रयत्न करने लगी, उन फकीरों ने पूछा आप क्या हूँढ रहीं हैं तो राबिया ने कहा कि मेरी एक सुई भूल गयी है, वही ढूँढ रही हूँ, इसपर उन फकीरों ने कहा कि आपकी सुई यहीं पर गिरी थी क्या? क्योंकि आप काफी देर यत्न कर चुकी हैं, पर आपको कुछ मिल नहीं रहा। इसपर राबिया ने कहा कि मेरी सुई तो मेरे कमरे में गिरी है पर यहाँ पर प्रकाश है, इसलिए यहाँ ढूँढ़ रही हूँ। उन फकीरों ने अपना सिर ठोक लिया कि आप बिल्कुल पागल हैं, जब सुई आपके कमरे में गिरी है, तो यहाँ कहाँ से मिलेगी। इसपर राबिया ने जो उत्तर उन फकीरों को दिया, वह उनका जीवन परिवर्तन करने वाला था। राबिया ने कहा- आप भी तो यही कर रहे हैं, आप ईश्वर को वहाँ ढूँढ रहें हैं जहाँ आसानी हो, मंदिर- मस्जिद जाना बहुत सरल है, पर स्वयं के भीतर जाना कठिन है। मैंने भी जहाँ रोशनी थी, वहाँ ढूँढ़ना शुरू किया. आपने भी जो सरल था वही किया। अगर ईश्वर को ढूँढ़ना है तो सर्व प्रथम स्वयं के भीतर ही उसे ढूँढ़ना होगा। हमने स्वयं के भीतर ही ईश्वर का विस्मरण कर रखा है, तो शुरुआत वहीं से करनी होगी। कबीर ने भी यही कहा है

मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में,

ना काबे कैलाश में, खोजी हों तो तुरंत मिलिहैं,

पल भर की तलाश में।

संत कबीर के दार्शनिक विचार से अवगत होकर हम कह सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति सहजता से आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की तरह उन्हें अपना गुरु स्वीकार कर लेगा। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने संत कबीर को अपना गुरु स्वीकार करते हुए कहा था :

रजनी दिन नित्य चला ही किया, मैं अनन्त की गोद में खेला हुआ।

चिरकाल न वास कहीं भी किया, किसी आँधी से नित्य धकेला हुआ।

न थका न रूका न हटा, न झुका, किसी फक्कड़ बाबा का चेला हुआ।

मद चूता रहा, तन मस्त हुआ, अलवेला में ऐसा अकेला हुआ।[2]

इसके साथ ही साथ हम देखते हैं कि कबीर का दर्शन अद्वैतवाद के अलावा सूफियों के भगवद् प्राप्ति में प्रेममार्ग, सनातन धर्मियों का वैष्णव संप्रदाय, नाथ पंथियों की हठयोग साधना, बौद्ध दर्शन के आष्टांगिक मार्ग (चतुर्थ आर्य सत्य) का प्रभाव, योग-दर्शन के चित्तवृत्ति निरोध का भाव, जैन-दर्शन का रत्नत्रय, सुकरात के ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय दर्शन का संपुट आदि के पर्याप्त गुणों को अपने भीतर समाहित करता है।

संत कबीर ने सूफियों के प्रेम-तत्व की प्रधानता को अपने साहित्य तथा दर्शन में प्रश्रय दिया है। इन्होंने आत्मा तथा परमात्मा के संबंध को अनेकानेक जगहों पर क्रमशः नायिका तथा नायक के रूप में चित्रित किया है। इसके साथ ही साथ संयोग तथा वियोग के रूप में जीव तथा परमात्मा का सजीव चित्रण, इन्होंने बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। संयोग तथा वियोग के कुछ उक्तियाँ निम्नलिखित रूप में द्रष्टव्य है:

संयोग-

दुलहिनी गावहु मंगलाचार |

हम घरि आए राजा राम भरतार ||

तन रत करि मैं मन रति करिहों पांचउ तत्त बराती ।

राम देव मोरे पाहुन आए मैं जोबन में माती ||

सरीर सरोवर बेदी करिहों ब्रह्म वेद उचारा ।

राम देव संगि भांवरि लेहहौ धनि धनि भाग हमारा ।।

सुर तैतीसी कौतिग आए मुनिवर सहस अठासी ।

कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरिख एक अविनासी ।।[3']

वियोग-

वासर सुख नहिं रैन सुख, ना सुख सपना मांहि।

जो नर बिछुरे राम सों, तिनको धूप न छांहि ॥[4]

कबीर हंसना दूर करू, रोने से करू चीत ।

बिन रायें क्यों पाइये, प्रेम पियारा मीत ||[5]

सनातन धर्मियों के वैष्णव संप्रदाय का प्रभाव कबीर के भक्ति भावना व दार्शनिक विचारों में यत्र-तत्र हमें अनेक जगह ब्रह्म के स्थान पर 'राम' 'हरि, विष्णु, 'गोविन्द' आदि शब्दों का प्रयोग दिखलायी पड़ता है- कबीर कुत्ता राम का, मुतियां मेरो नाउं। गले प्रेम की जेवरी, जित खींचे तित जाऊं ।।[6]

' गोब्यंद के गुण बहुत है, लिखे लिखे जु हरदै माँहि। डरता पाँणी ना पिउँ, गति वे धोये जाँहि ।।[7]

' हरि रस पीया जानिये, उतरे नांहि खुमारि ।

मतवाला घूमत फिरै, नहिं हो तन की सारि ।।[8]

नाथ - पंथियों का कबीर पर प्रभाव आचार्य हजारीप्रसार द्विवेदी इन शब्दों में बताते हैं कि "कबीरदास के मत से 'नाथ' वह है जो समस्त त्रिभुवन का एकमात्र यती पर ब्रहम है।[9']

2. निष्कर्ष :

इस प्रकार हम देखते हैं कि कबीर के दार्शनिक विचारों में न केवल अनेकानेक दार्शनिक मत-मतान्तरों का प्रभाव हैं, बल्कि उन सबको समन्वय करके अपने फक्कड़ाना एवं मस्ती भरे अंदाज़ में मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने का जो सलीका है, वह कबीर को औरों से अलग बनाता है। कबीर के दार्शनिक तथ्यों की प्रासंगिकता इस बात में समाहित है कि आज मनुष्य विभिन्न धर्मों के रूढ़िवादी मानसिकता को लेकर आपस में लड़ रहा है। वे कबीर के दर्शन को यदि

अपने धर्म के सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखें तो ये जान पाएंगे कि जिन बाह्याचार एवं आडम्बरों को वे अपने धर्म का मूल प्राण मान बैठे हैं, वह मात्र उनकी कोरी कल्पना है। धर्म के लिए अंग्रेजी शब्द 'Religion' है जिसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ है Re (again) + ligare (bind or connect) -अर्थात् 'Back to bind' or 'Again bind'। इस प्रकार अर्थ के आधार पर हम देखते हैं कि धर्म तो जोड़ने का कार्य करता है, लेकिन विडंबना ये है कि यदि हम इतिहास उठाकर देखें तो यह पाएंगे कि विश्व में सबसे अधिक युद्ध धर्म के ही नाम पर लड़े गए हैं। 'दर्शन इस बात का गहन अन्वेषण करता है कि मनुष्य जीवनका परम लक्ष्य क्या है? इसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है? दूसरी तरफ साहित्य शब्द का अर्थ है- 'सहितस्य भावः साहित्यम' अर्थात् जो मानव मात्र के लिए 'हित' के भाव, 'कल्याण' के भाव तथा 'सहित' रूप से सबको एक साथ समेटे हो वही 'साहित्य' है। कबीरदास जी के दर्शन में साहित्य एवं साहित्य में दर्शन परिलक्षित होता है या यूँ कहें कि इन्होंने अपनी वाणी में साहित्य एवं दर्शन का अन्योन्याश्रित रूप सामने रखा है।

इस प्रकार कबीर के विचारों का सम्यक मूल्यांकन करने पर हम पाते हैं कि इनके दर्शन की प्रासंगिकता' आज भी बनी हुई है, जिसमें ये जीवन की क्षणभंगुरता को समझाते हुए उस धन की प्राप्ति की बात करते हैं जो मनुष्य के मरणोपरांत भी साथ जाता है। इन्हीं के शब्दों में

यह तब काँचा कुंभ है, लियाँ फिरैगे साथ ।

ढबका लागा फूटिगा, कछू न आया हाथ ॥

कबीरा सो धन संचिए, जो आगे कूं होइ।

सीस चढाए पोटली, ले जात न देख्या कोई ||

आचार्य चाणक्य ने भी कहा है "शरीर अनित्य है, अर्थात् नाशवान है, धन सम्पत्ति भी हमेशा रहने वाली नहीं है, मृत्यु सदा सिरहाने खड़ी है, अतः धर्म का संचय तथा धर्म का आचरण ही सदैव करना चाहिए -

अनित्ययानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः ।

नित्यं सन्निहितो मृत्यु : कर्तव्यो धर्मसंग्रह: ॥[10]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बारिया, किरण . चाणक्य नीति (एवं सूत्र संग्रह). प्रकाशक लक्ष्मी प्रकाशन 4734, बल्लीमारान, दिल्ली-110006, नया संस्करण, पृष्ठ संख्या - [1]169, [10]159
2. सिंह,नामवर. दूसरी परम्परा की खोज .राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इसकी संस्करण 1. बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण प्रथम-2008, दूसरी आवृति: 2015, पृष्ठ संख्या-[2]57
3. दास ,श्यामसुंदर.कबीर ग्रंथावली .लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाघबाद. 2011, पुनर्मुद्रण 2014, 2015, पृष्ठ संख्या - [3]117,[7]110
4. ज्ञानानंद जी, साध्वी.सद्गुरु कबीर साहब कृत बीजक, श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केंद्र संत कबीर ज्ञान मार्ग सिहोडीह, सिरसिया, गिरिडीह (झारखंड) 815301, तृतीय संस्करण संवत् 2065, सन् 2008, पृष्ठ संख्या- [6]56
5. 'जिज्ञासु',लालचन्द दूहन. कबीर वाणी अमृतसंदेश .मनोज पब्लिकेशन्स 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084, छठा संस्करण, 2010. पृष्ठ संख्या - [4]55, [5]58, [8]103
6. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. कबीर - [कबीर के व्यक्तित्व, साहित्य और दार्शनिक विचारों की आलोचना] .राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002, उन्नीसवीं आवृत्ति 2014, पृष्ठ सं०- [9]38